अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल

तत्त्वज्ञान (वर्ष : 2023) दिनांक : 19.08.2023

समय सीमा : 3 घंटा चतुर्थ वर्ष : प्रथम प्रश्न पत्र पूर्णांक : 100

लघुदण्डक–30

प्र. 1 कोई चार प्रश्न लिखें– 24

(क) समुद्घात द्वार लिखें।

(ख) लेश्या द्वार में सात नारकी से सर्वार्थसिद्ध तक लिखें।

(ग) देवता की अवगाहना लिखें।

(घ) गति आगति द्वार में पांच स्थावर से यौगलिक तक लिखें।

(ङ) तीन विकलेन्द्रिय तथा तिर्यंच पंचेन्द्रिय की स्थिति लिखें।

प्र. 2 कोई दो द्वार लिखें– 6

(क) दर्शन द्वार।

(ख) पर्याप्ति द्वार।

(ग) च्यवन द्वार।

(घ) अनुत्तर विमान, नौ लोकान्तिक देव तथा तीन किल्विषी देवों की स्थिति लिखें।

पांच ज्ञान-30

प्र. 3 कोई चार प्रश्नों के उत्तर लिखें– 24

(क) सिद्ध करें कि निगोद के जीवों में भी अक्षर का अनंतवां भाग सदाकाल उद्घाटित रहता है।

(ख) प्रतिबोधक दृष्टांत तथा मतिज्ञान का विषय लिखें।

(ग) अनन्तर सिद्ध केवल ज्ञान के प्रथम बारह प्रकार लिखें।

(घ) मनःपर्यवज्ञान के प्रकार तथा मनःपर्यवज्ञान का विषय द्रव्यतः, क्षेत्रतः लिखें।

(ङ) अवधिज्ञान द्वारा देखने की शक्ति का यंत्र लिखें।

प्र. 4 किन्हीं छह प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखें– 6

(क) प्रत्येक बुद्ध के उपधि कितने प्रकार की होती है?

(ख) नारक और देवों में कौन सा अवधिज्ञान होता है, किस अपेक्षा से?

(ग) व्यंजन अक्षर किसे कहते हैं?

(घ) वैमानिक देव तिर्यक लोक में कितने द्वीप समुद्र देखते हैं?

(ङ) मतिज्ञान श्रुतज्ञान दोनों ज्ञान सहचर हैं, इनके दो भेदों का हेतु क्या है?

(च) द्वादशांगी को अन्तरहित क्यों कहा है?

(छ) अवस्थित अवधिज्ञान किसे कहते हैं?

(ज) नौ निकाय किसे कहते हैं?

गीतिका-10

प्र. 5 कोई दो प्रश्नों के उत्तर लिखें– 2

(क) चार घाति कर्मों की सत्ता किन गुणस्थान तक होती है?

(ख) ईर्यापथिक बंध की स्थिति कितनी बतायी है, इनका वर्णन किन आगमों में आया है?

(ग) मोह कर्म का उदय निष्पन्न भाव किन गुणस्थान तक होता है?

प्र. 6 दो पद्य भावार्थ सहित लिखें– 8

(क) आयु बंध.....कही जै रे।

(ख) खपक श्रेण.....जाचो रे।

(ग) मोहकर्म.....समाधो रे।

(घ) ज्ञानावरणी.....बंधायो रे।

पूर्व कंठस्थ ज्ञान-30

प्र. 7 निम्न प्रश्नों के उत्तर लिखें–

(क) पच्चीस बोल–निर्जरा के बारह भेद ***अथवा*** गुणस्थान चौदह। 3

(ख) चतुर्भंगी–चौथा बोल ***अथवा*** सतरहवां बोल। 3

(ग) पच्चीस बोल की चर्चा–तीसरा बोल ***अथवा*** पंद्रहवां बोल। 3

(घ) तत्त्व चर्चा–छः द्रव्यों पर छह में नौ में की चर्चा ***अथवा*** विविध विषयों पर छः द्रव्य नौ तत्त्व। 3

(ङ) जैन तत्त्व प्रवेश–दृष्टान्त द्वार में आश्रव लिखें ***अथवा*** द्रव्य गुण पर्याय द्वार में सामान्य गुण लिखें। 3

(च) कर्म प्रकृति–वेदनीय कर्म की गुणस्थानों में अवस्थिति ***अथवा*** शुभ नाम कर्म भोगने के हेतु। 4

(छ) बावन बोल–आठ कर्मों का बंध, उदय, सत्ता किस-किस गुणस्थान तक? अथवा उदय के तैंतीस बोल किस-किस कर्म के उदय से? 4

(ज) इक्कीस द्वार–अचरम में ***अथवा*** सास्वादन सम्यक्त्वी। 4

(झ) जैन तत्त्व प्रवेश–पुण्य पाप द्वार ***अथवा*** नय की परिभाषा व प्रकारों को लिखें। 3